om 1 Delhi Final 1_Page 1 and 2 18/03/2015 10:57 Page 9

कथा सरिता

सच्चा बेटा

एक राजकुमार शहर घूमने निकला, उस समय अप्सरा-सी सुंदर नगर सेठ की पुत्रवधु भी उसी रास्ते से घर लौट रही थी। राजकुमार ने उस रूपसी को देखा, वे प्रस्तर प्रतिमा की तरह स्थिर हो गए। ऐसा सौंदर्य तो उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था, इतना रूप भी किसी मानवी का होता है यह तो पहली बार ही उसने जाना था। वे कितनी ही देर उसे अपलक निहारते रहे अचानक उनके विवेक ने झटका दिया-यह क्या, मैं भावी राजा होने के नाते पूरी प्रजा का भाई और बेटा हूँ। मेरे से इस प्रकार का घृणित कार्य! किसी राह चलती नगर की बहन-बेटी पर दृष्टि डालना उचित नहीं है।

मुझे समस्त प्रजा की नारीजाति को माँ और बहन समझना चाहिए। धिक्कार है इस नयन युगल को, जिन्होंने विकारी भावों से बहन समान इस नारी को देखा। मुझे तुरंत प्रायश्चित करना चाहिए। वे तत्क्षण पश्चाताप के आँसू बहाते हुए अपनी माता के पास पहुँचे। रोते-रोते उन्होंने पूरा वृत्तांत सुना दिया। किस प्रकार मन में विकार भाव पैदा हुए? साथ सज़ा भी मांग ली। आज की पुत्र मोह में पगली माँ होती तो तुरंत कहती-'क्या हो गया बेटा! मन में ही तो कुछ अशुद्ध भाव पैदा हुए थे। चिन्ता मत कर बेटा। इसमें रोने और सज़ा मांगने जैसा कुछ नहीं है।' वह सच्ची माँ थी। वर्तमान का नहीं, भविष्य का सोचने वाली थी। उसने तुरंत कहा-'तुमने भयंकर भूल की है। पूरी प्रजा की नारियों के सदाचार का दायित्व भविष्य में तुम्हारे ऊपर आने वाला है। अगर तुम ही अपनी नारी प्रजा की सुरक्षा नहीं करोगे तो उसके सदाचार की रक्षा कैसे संभव होगी? 'यथा राजा तथा प्रजा' अगर राजा प्रत्येक की बहन-बेटी को अपनी बहन बेटी समझे तो शील और सदाचार का रक्षण संभव है। लाखों नारियों की पवित्रता के रक्षण के लिए तुझे अभी से ही कृत संकल्प होना चाहिए। सज़ा के फलस्वरूप लगातार चार दिनों तक जैसे काजल आँखों में डाला जाता है वैसे ही मैं अपने हाथों से तुम्हारी आँखों में नमक डालूंगी ताकि भविष्य में कभी भी तुम्हारी नज़रें किसी की ओर नहीं उठें, उठें भी तो वे भाई और पिता की नज़र के रूप में उठें। युवराज ने प्रसन्नतापूर्वक सज़ा स्वीकार की और माँ ने अपने ही हाथों से चार दिन तक नमक डाला। इसे कहते हैं संस्कारवान और सदाचारी बेटा।

संगत का असर

एक संत अपने शिष्यों के साथ जंगल से कहीं जा रहे थे। शाम की प्रार्थना का समय हुआ। झरने के पानी से हाथ धो करके शिष्यों ने चादर बिछाई। प्रार्थना करनी शुरु ही की थी कि अचानक गर्जना करता हुआ एक शेर दूर से दिखाई दिया। उसे देखकर शिष्य भयभीत हुए। वे दौड़कर वृक्ष पर चढ़ गए। शेर नज़दीक आता गया, पेड़ पर बैठे शिष्यों के मन में घबराहट बढ़ती गई। उनका शरीर थर-थर कांपने लगा। पर शेर जैसे आया वैसे ही चला गया। संत प्रार्थना में इतने लीन रहे कि उन्होंने शेर को देखा तक नहीं। शेर ने भी उन्हें नहीं देखा। शिष्य वापस वृक्ष से नीचे उतरे और प्रार्थना में बैठे। प्रार्थना पूरी होते ही चादर उठाकर वे आगे जाने लगे।

अचानक एक मच्छर संत की नाक पर आकर बैठा। मच्छर ने काटा। संत चीख उठे। वे उस वेदना को सहन नहीं कर सके। एक शिष्य बोला-संतवर! यह क्या बात है? शेर पास से गुज़र कर चला गया, तब तो आपने नज़र उठाकर देखा तक नहीं और इस तुच्छ मच्छर ने थोड़ा-सा काटा तो इस थोड़ी-सी वेदना को सहन नहीं कर सके, चीख उठे। यह क्या बात है?

संत ने बहुत ही गहरा उत्तर देते हुए कहा-'वत्स! उस समय मैं ईश्वर के साथ था और इस समय मनुष्य के साथ हूँ।'

बस तू ही

एक राजमहल में एक झाड़ू लगाने वाले ने अचानक रानी को देख लिया। रानी की सुंदरता को दखकर वह मंत्रमुग्ध हो गया। आकर्षण की डोर में बंधा वह कर्मचारी रानी को पाने के सपने देखने लगा। सौंदर्य के आकर्षण में अंधे बने उस अभागे को यह मालूम नहीं था कि कहाँ रानी और कहाँ वह झाड़ू लगाने वाला कर्मचारी। उसने जाकर अपने दोस्तों को सारी बात बताई। दोस्त उसका मज़ाक उड़ाते हुए बोले-कहाँ तो वह महलों की मलिका कहाँ तू सड़क का राजा। पर उसने रानी को हर हाल में पाने का निश्चय कर लिया।

एक दिन उसने साधु का वेश बनाया और पास के गाँव मे जाकर धूनी रमा ली। खाना-पीना सब छोड़कर उसने तू ही तू की रट लगानी शुरु कर दी। लोगों ने सोचा यह ईश्वर को तू ही, तू ही कहकर याद कर रहा है। उसके दर्शनों के लिए लोगों का जमघट लगने लगा। वे आते और श्रद्धापूर्वक प्रणाम करके चले जाते। बहुत से श्रद्धालु रुपए-पैसे भी चढ़ाने लगे। कोई उसकी आरती उतारने लगा तो कोई सामने बैठकर भजन गाने लगा। उसने कभी किसी को आँख उठाकर भी नहीं देखा। वह तो बस रानी की याद में तू ही, तू ही की रट लगाता रहा। धीरे-धीरे आस-पास के गाँव में उसके 'सच्चे भक्तिभाव' के चर्चे होने लगे। किसी को यह नहीं मालूम था कि संत महाराज प्रेम दीवाने बनकर रानी के लिए तू ही तू की रट लगाए हुए हैं। एक दिन राज दरबार में भी उस त्यागी तपस्वी संत की कीर्ति कथा पहुँची। दरबारियों ने राजा को बताया कि एक सच्चे संत राजधानी के पास पधारे हुए हैं। राजा ने रानी से कहा-'मैं तो राजकाज में व्यस्त हूँ तुम जाकर संत महात्मा के दर्शन कर आओ।' रानी संत की कुटिया में जा पहुँची। जब रानी दर्शन कर रही थी, तो सारी भीड़ छंट गई। जैसे ही रानी ने संत के दर्शन किए रानी तुरंत पहचान गई कि यह तो राजमहल का कर्मचारी ही है। दूसरे ही पल रानी ने सोचा-भक्ति की शक्ति किसी में भी प्रकट हो सकती है। रानी ने संत को प्रणाम करते हुए कहा-मैं इस राज्य की रानी हूँ। महाराज ने भी आपके चरणों में प्रणाम निवेदन किया है। यह सुनते ही उस संत की दृष्टि बदल गई। उसने सोचा जब झूठी प्रार्थना करने से रानी आकर मिल सकती है तो सच्चे मन से की गई प्रार्थना से भगवान भी मिल सकते हैं। उसने पलक उठाकर रानी को भी नहीं देखा और बस रट लगाता रहा-तू ही, तू ही, बस तू ही। अब उसका हृदय परिवर्तन हो चुका था। उसके मन में रानी के सौंदर्य के स्थान पर ईश्वरीय सौंदर्य प्रकट हो गया। इस तरह झूठी प्रार्थना सच्ची प्रार्थना में बदल गई।

उत्तराधिकारी

गंगा तट पर सुधर्म ऋषि का आश्रम था। आश्रम में शिक्षा ग्रहण कर रहे शिष्यों में अमर्त्य, चतुरसेन तथा वीरभद्र ऋषि के प्रमुख शिष्य थे। तीनों ही बड़े निष्ठावान तथा परिश्रमी थे। सुधर्म ऋषि ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव के लिए तीनों शिष्यों को बुलाया और कहा 'तुम तीनों मेरे लिए एक सुंदर-सा उपहार लेकर आओ, इसके लिए मैं तुम्हें एक वर्ष का समय देता हूँ। जो भी मुझे संतुष्ट कर देगा वही मेरा उत्तराधिकारी होगा। तीनों शिष्य ऋषि की आज्ञा लेकर वहाँ से चल दिए। चतुरसेन एक राजा के यहाँ मंत्री पद पर काम करने लगा और वीरभद्र एक समुद्र के किनारे रहकर गोताखोर बन गया। अमर्त्य एक ऐसे राज्य में पहुँचा जो अकाल-पीड़ित था। अकाल से जूझते लोगों में उत्साह जगाकर, उसने एकजुट होकर काम करना सिखाया। कुओं को गहरा करवाया। इस तरह पानी का संकट दूर हो गया। वहाँ फसल लहलहाने लगी। लोग खुशहाल होने लगे। एक वर्ष पूरा हुआ। चतुरसेन तथा वीरभद्र ने अपनी क्षमतानुसार कीमती उपहार गुरु के चरणों में भेंट किए लेकिन अमर्त्य नहीं पहुँचा। ऋषि को चिंता होने लगी। वे उसकी खोज में चल दिए। खोजते हुए ऋषि एक राज्य में पहुँचे। खुशहाल प्रजा को देख ऋषि बहुत प्रसन्न हुए और राजा से मिले। वे बोले 'राजन, आप महान है क्योंकि आपकी प्रजा सुखी है।' राजा बोला, 'ऋषिवर, महान तो वह है जो अचानक राज्य में अवतरित हुआ, लोगों को मेहनत करना सिखाया और मेरे राज्य को अकाल की पीड़ा से उबार लिया।' ऋषि ने उस व्यक्ति से मिलने की इच्छा जताई और राजा के साथ हो लिए। ऋषि ने देखा वह और कोई नहीं उनका प्रिय शिष्य अमर्त्य था। धूल पसीने में लिपटे अमर्त्य को गले लगा लिया और बोले, 'दुखियारों के आंसू पोंछकर उन्हें हंसा दे इससे बड़ा उपहार मेरे लिए हो ही नहीं सकता। तुम ही मेरे उत्तराधिकारी हो।'

आजमगढ़-उ.प्र.। किसान सशक्तिकरण अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कृषि उपनिदेशक आर.बी. सिंह, जिला कृषि अधिकारी बसंत कुमार दूबे, नगरपालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि दीनू जायसवाल, ब्र.कु. रंजना, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. विपिन, ब्र.कु. मीता तथा अभियान दल के सदस्य।

नौतनवाह। महाशिवरात्रि पर आयोजित रैली 'शिव की बारात' के दौरान उपस्थित हैं विधायक मुन्ना सिंह, ब्र.कु. विष्णु, ब्र.कु. प्रहलाद, ब्र.कु. संदीप तथा अन्य।

सासाराम-विहार। महाशिवरात्रि पर आयोजित सर्व धर्मात्माओं की झाँकी का उद्घाटन करते हुए एस.पी. संदीप लांडे, डी.एस.पी. अलख निरंजन चौधरी, एस.डी.ओ. निलिन कुमार, ब्र.कु.बबिता, ब्र.कु.सुनीता व अन्य।

सोनीपत। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'अंधकार से प्रकाश की ओर' कार्यक्रम में शिव ध्वज लहराते हुए भाजपा उपाध्यक्ष राजीव जैन, ब्र.कु. चक्रधारी, प्रो. एस.एम. मिश्रा, ब्र.कु. लक्ष्मण व अन्य।

तिनसुकिया-असम। 'शिवजयंती महोत्सव' कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए राजीव रंजन,कमांडेन्ट,सी.आर.पी.एफ., ब्र.कु. सत्यवती तथा अन्य।

कानपुर-किदवई नगर। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के समय उपस्थित हैं स्वामी मुनीष शर्मा जी महाराज,शंकराचार्य मठ प्रमुख, ब्र.कु. दुलारी तथा अन्य।